DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

छंद

Part -2

LIVE 08-05-2024 09:00 AM

प्रश्न- छन्द प्रभाकर किसकी रचना है?
उत्तर: मतिराम

प्रश्न: अवधि का निजि छन्द है?
उत्तर: बरवै

प्रश्न: रत्नाकर कृत गंगावतरण किस छन्द में लिखा गया?
उत्तर: रोला

प्रश्न: घनाक्षरी छन्द है?
उत्तर: वर्णिक छन्द

प्रश्न: वीर या आल्हा किस जाति का छन्द है?
उत्तर: मात्रिक छन्द
प्रश्न: जिस छन्द में वर्णिक या मात्रिक प्रतिबन्ध न हो, उसे कहते हैं?
उत्तर: मुक्तक छन्द
प्रश्न: निराला की कविता जूही की कली किस छन्द का उदाहरण है?
उत्तर: मुक्तक छन्द।

वर्णिक छन्द – जिन छन्दों की रचना वर्णों की गणना के आधार पर की जाती है। उसे वर्णिक छन्द कहते है।

वर्णिक छन्द	वर्ण	वर्णिक छन्द	वर्ण
उपेन्द्रवज्रा	11	वंशस्थ और तोटक	12
मालिनी	15	शिखरिणी	17
सवैया	22-26	रूपघनाक्षरी	32
इन्द्रवज्रा	11	भुजंगी	11
द्रुत विलम्बित	12	बसन्ततिलका	14
मंदाक्रान्ता	17	शार्दूलविक्रीडित	19
देवघनाक्षरी	33	कवित्त / मनहरण / घनाक्षरी	31

मात्रिक छन्द – जिन छन्दों में मात्राओं की समानता के नियम का पालन किया जाता है। तथा वर्णों की समानता पर ध्यान नही दिया जाता उसे मात्रिक छन्द कहते है।

मात्रिक छन्द	मात्राएँ	मात्रिक छन्द	मात्राएँ
चौपाई	16-16	दोहा	13-11 (24)
सोरठा	11-13 (24)	गीतिका	26
उल्लाला	15-13 (28)	हरिगीतिका	28
वीर / आल्हा	16-15 (31)	बरवै	12-7 (19)
रोला	24	कुण्डलिया	24
छप्पय	रोला (24) + उल्लाला (28)	दोहा + रोला	

(i). **सममात्रिक छन्द** – जिस छन्द के चारों चरणों में मात्राओं की संख्या एवं क्रम-नियोजन समान होता है, उसे सम मात्रिक छन्द कहते है। जैसे – चौपाई, रोला, गीतिका, हरिगीतिका

ट्रिक : चौ रो गीत हरी

- ट्रिक → सममात्रिक
- चौ → चौपाई
- रो → रोला
- गीत → गीतिका
- हरी → हरिगीतिका

चौपाई – यह एक सममात्रिक छन्द है इसके प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती है। चरण के अन्त में दो मात्राएँ गुरु (S) होती है।

(1) लघु - अ, इ, उ, ऋ, ँ
(S) गुरु - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ं, : संयुक्त

जैसे- (i). जय हनुमान ज्ञान गुन सागर =16

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर, =16

राम दूत अतुलित बलधामा =16

अंजनि पुत्र पवन सुत नामा ॥ -16

त् + र - संयुक्त वर्ण

(ii). मंगल भवन अमंगलहारी

उमा सहित जेहि जपत पुरारि,

जौ न होत जग जन्म भरत को

सकल धरम धुर धरनि धरत को। गुरु

रोला – इसमें कुल 24 मात्राएँ होती हैं। तथा 11 व 13वीं मात्रा पर विराम होता है एवं चरण के अन्त में दो गुरु तथा दो लघु वर्ण होते हैं।

ऽऽ ॥

जैसे - मूलन ही की जहाँ, अधोगति केशव गाइय - 24

होत हुतासन घूम, नगर एकै गलिनाइय - 24

दुर्गति दुर्ग ही जो, कुटिल गति सरितन ही में - 24

औ फल को अभिलाष, प्रकट कुल कवि के जी में ॥ - 24